Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

प्राचीन स्थापत्य व समकालीन भित्ति चित्रण – धार्मिक नगरों के सौंदर्यीकरण के सन्दर्भ में

Dr. Lakshaman Prasad

Assistant Professor (Painting), School of Performing And Visual Arts, IGNOU, Delhi

संक्षेपिका

कला का सम्बन्ध सीधे बोध या अन्तःचेतना से होता है। यह चेतना कलाकार के सृजन की प्रेरणा का मूल स्रोत होता है। यहाँ कला के सार्वभौमिकतत्वों की चर्चा भी आवश्यक हो जाती है, जो सृजनात्मक कार्य के मूल्यांकन व रसास्वादन के लिए सम्प्रेषण का कार्य करती है। इस प्रकार संवेदना की बात करें तो अभिव्यक्ति के रूप में सबसे पहले अभिव्यक्ति का माध्यम भित्तिचित्र को ही माना जाता है जिसका जीता जगता उदाहरण आदिम कला के रूप में देखा जा सकताहै।

बीज शब्दः प्राचीन स्थापत्य व समकालीन भित्ति चित्रण, धार्मिक नगर, सौंदर्यीकरण

लैटिन भाषा में "म्यूरस" का अर्थ दीवार होता है। इस प्रकार भवन की आंतरिक व भीतरी दीवार की सतह पर रंग द्वारा, कोयले से रेखांकन कर देना, बाहर से टेराकोटा, लकड़ी, सीमेंट खुरचकर, सिरेमिक, मोजैक व फाइबर–शीशा आदि से सृजनात्मक कार्य करना भित्तिचित्रण के अंतर्गत आता है। प्राचीन ग्रंथों में जैसे शिल्पविधान, विष्णुधर्मोत्तरपुराण (भूमि बंधन व भित्तिचित्र), समरांगणसूत्रधार व मानसोल्लास आदि में भित्तिचित्रण के विधियों का वर्णन आया है।

भित्तिकला का सर्वप्रथम दर्शन प्रागैतिहासिक आदिम द्वारा निर्मित गुफा भित्तिचित्र के द्वारा होता है। जो अपने संप्रेषण के लिए अंकित कि ये थे "इसी प्रकार एक साक्षात्कार मे जयपुर के प्रसिद्ध भित्ति कला कर श्री भवानी शंकर शर्मा कहते है कि एक दीवार पर बने भित्तिकला से संप्रेषणयुक्त व् कथात्मक ध्वनि निकलती है। जो अपनी बात सहजता से आम लोगो तक पहुँचाती है और इनके हृदय में अपनी छाप छोड़ती है। इसी प्रकार क्रमशः विकास व् परिपक्वता के क्रम में शास्त्रीय भित्तिचित्र जोगीमारा, अजंता, बाघ, बादामी, सित्तनवासल व् एलोरा आदि के गुफा की आंतरिक दीवारों पर टेम्परा व् फ्रेस्को से को माध्यम में निर्मित चित्र और भित्तिकला रिलीफ प्रस्तर कला का दर्शन होता है। गुफा के बाद पल्लव् व् चोल काल में मंदिर व् मध्यकाल में राजस्थानी राज महलों छतरी कला में भी भित्तिचित्रण एक नए छवि के साथ दर्शित होता है जिसका माध्यम–फ्रेस्कोसे को व् व्यूनों रहा है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

भीमबेट का गुफा चित्र

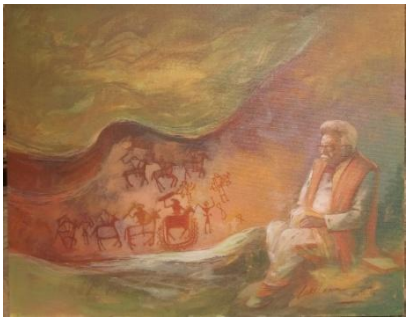

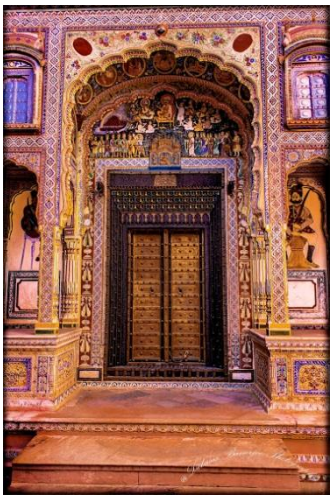

अजंताभित्तिचित्र –गुफा संख्या –01 पद्मपाणि बोधिसत्व , नवलगढ़, राजस्थान, भित्तिचित्र, जयपुरफ्रेस्कोबुनो

इसी के साथ भित्ति चित्रण की यात्रा में आधुनिकता का समावेश होता हुआ दिखाई देता है जिसमे नवीन तकनीक व शैलियों का प्रयोग बहुत ही कला कौशल तरीके से किया गया, जिसमे 21वीं सदी के विज्ञान व नए सामग्री का प्रयोग हुआ । इस प्रकार भित्ति कला में जो समकालीन प्रयोग सौंदर्यानात्मक ढंग से हो रहा है उसमें समाज व मानव जीवन के उत्साहपूर्ण यात्रा का दर्शन होता है ।

इसी श्रृंखला की कड़ी में वर्तमान समय में कुछ प्रमुख धार्मिक शहर जैसे –प्रयागराज, काशी, कुरुक्षेत्र व हरिद्वार आदि के वाह्य एवं आतंरिक स्थापत्य को पौराणिक ऐतिहासिक प्रकृति व दैनिक दिनचर्या के विषयों से भित्तिचित्रण के माध्यम से सौन्दर्यीकरण के रूप में सजाया जा रहा है।

प्रविधि

सामान्य रूप से शोध–पत्र नवीन ज्ञान कि खोज की दिशा में किया गया व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध प्रयास है। जिसमे अनेक प्रकार के तथ्यों का एकत्रीकरण और अनेक आधारो पर व्यापक निष्कर्ष निकालना सम्मिलित है। जिसमे शोधार्थी ने शोध विषय के अन्तर्गत सीमित ज्ञान के विस्तार तथा उसके स्पष्टीकरण के लिए निम्नलिखित प्रविधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध विषय में वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया हैं।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

स्रोत

शोध विषय भित्तिचित्रण से जुड़ा हुआ है जो निरंतर एक प्रयोगशील प्रक्रिया है। जिसमें समस्याओं के चुनाव के लिए परिकल्पना के स्पष्टीकरण के लिए तथा तथ्यों के संकलन के लिए प्राथमिक आंकड़ों के रूप में साक्षात्कार, अवलोकन तथा प्रश्नावली की प्रणालियों का प्रयोग किया गया। द्वितीय सामग्री के आधार पर तैयार सामग्री, उसका विश्लेषण, स्पष्टीकरण, व्याख्या और अन्य सभी समकालीन सामग्रियों का प्रयोग किया गया। अन्य सभी विषय से सम्बन्धितं प्रकाशित, अप्रकाशित रिपोर्ट, लेख का भी सहायता लिया गया। शोध–पत्र में दृश्य रूप से प्राप्त तथ्यों के आधार पर शोध–पत्र का कार्य पूर्ण किया गया हैं।

भित्ति–चित्रण

भित्तिचित्रण की परंपरा की बात करें तो आदिम कला को याद करना होगा जिनके तत्कालीन जन–जीवन और संस्कृति के कलासृजन का आधार भित्ति ही था, इसका उदहारण वर्तमान समय में भीमबेटका, मिर्जापुर, होशंगाबाद, सिंहनपुर, बेल्लारी व रायगढ़ आदि गुफाचित्रों में देखा जा सकता है। भारतीय भित्तिचित्रण के यात्रा के साथ इसके श्रेणियों की चर्चा करें तो इनको मुख्य रूप से 2 भागों में बता जा सकता है –

1 लोक भित्ति–चित्रण (ग्रामीण)

2 शास्त्रीय भित्ति–चित्रण (गुफा व हवेली)

3 समकालीन भित्तिचित्रण (साधारण तकनीकी प्रधान)

4 टेक्नोलॉजी युक्त भित्तिचित्रण तकनीक

1. लोक भित्ति –चित्रण (ग्रामीण)

सदियों से भारतीय समाज में लोक पर्व की परंपरा चली आ रही है जिसका मानव जीवन मूल्य में कही न कही बहुत ही महत्ता है। जहाँ पर देखा जाये तो अपने देश में विभिन्न बोली–भाषा के साथ ही साथ एक ही तीज–त्यौहार को अलग अलग नामों जानते हैं लेकिन उनको जब लोक भित्ति कला के माध्यम से दर्शातें है तो सबके मूल रूप अर्थात आत्मा एक ही सी दर्शित होती है । चाहे बात करें मधुबनी, वार्ली, गांडे, भील, बनारस की लोक भित्ति चित्र, उदयपुर, जयपुर, मसौर, केरल, शातिनिकेतन संथाल, नागपंचमी, कोहबर व सांझी आदि। इन सभी लोक भित्तिचित्रण में लोक भावना का दर्शन होता है। लोक भित्तिचित्रण में रोजमर्रा के सामग्री का ही सर्वधा प्रयोग होता रहा है जैसे रंग के लिए रामराज मिटटी, पिसा हुआ चावल का घोल, हल्दी, काजल, खड़िया, गेरू, हरे रंग के लिए पेड़–पौधों के पत्तियों का रस, नील आदि एवं तूलिका के लिए लकड़ी में सूती कपड़ा लपेटा हुआ, बासं की लकड़ी का अग्र भाग कुछ हुआ या अँगुलियों व भवन के आतंरिक एवं बाहरी दीवार (भित्ति) का। आकृतों में गणेश, शुभ मंगल प्रतीक चिन्ह–स्वस्तिक, सूर्य, चन्द्रमा, प्रकृत, मछली व हिरन इत्यादि जाता है। आकृतियों के सपाट रंगाकंन के बाद काले या गरू के रंग से कोमल प्रभावशाली रेखांकन किया जाता है। इस प्रकार देखें तो लोक भित्ति चित्रण लोक जीवन के शुभ–मंगल कामनाओं को सौन्दर्यमयी ढंग प्रस्तुत किया गया है । जिसमे स्वतंत्र भावनाओं, कला शैलियों व मुक्त तकनीक का प्रयोग होता चला आ रहा है। इस भित्तिचित्रण में निर्माता के रूप में घर की माता और बहनों की भूमिका ज्यादा होती है लेकिन समकालीन समाज में देखा जाये तो रोजी रोटी के लिए पुरुष वर्ग भी इसको कर रहा है जैसे बनारस की शादी–विवाह के लोक

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

भित्ति–चित्र पुरुषों द्वारा किया जाता है। समकालीन भित्तिचित्रण की बात करे तो सर्वाधिक लोक भित्तिचित्रण तकनीक में किये जा रहे हैं ।

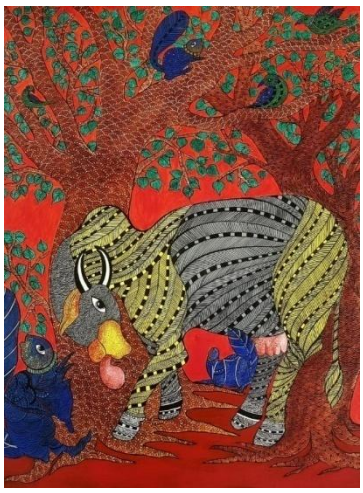

मधुबनी लोक चित्र, चित्रकार – जानकी

वाराणसी, लोक भित्तिचित्र

2 . शास्त्रीय भित्ति चित्रण (गुफा व हवेली)

शास्त्रीय भित्तिचित्रण का आधार मुख्य रूप से तकनीकी प्रधान रहा है जिसमे टेम्परा, फ्रेस्को सेको व फ्रेस्को बुनो सिद्धांत का दर्शन होता है। भारतीय प्राचीन गुफा भित्तिचित्रों का निर्माण इन्ही सिद्धांत के द्वारा पूर्ण किया गया है चाहे वह अजंता के भित्तिचित्र हो या चाहे बाघ, जोगीमारा व एलोरा, इसके अतिरिक्त उत्तर मध्यकाल में राजपूत व पहाड़ी, चोल, चालुक्य पंड्या, व केरल के शासकों ने अपने हवेलियों व मठ–मंदिरों को भी इन्ही तकनीक के द्वारा भित्ति चित्रण करवाया जिनके विषय वस्तु बौद्ध, जैन व हिन्दू देवी–देवताओं आदि हैं। राजपूत शैली में राजस्थान के हवेलियों में शौर्य गाथा पर आधारित व पहाड़ी शैली में राधा–कृष्ण को चित्रित फ्रेस्को बुनो व फ्रेस्को सेको विधि से पूर्ण किया गया है।

इन दोनों भित्ति चित्रण सामग्री व सिद्धांत के अतिरिक्त 1 समकालीन भित्ति चित्रण (साधारण तकनीकी प्रधान) व 2 टेक्नोलॉजी युक्त भित्ति चित्रण तकनीक हैं जो समकालीन भित्ति चित्रण में जोर सोर अपनाया जा रहा है।

प्राचीन स्थापत्य व धार्मिक शहरो ं के भवन

भारतीय मूर्तिकला के इतिहास की यात्रा की बात करें तो यह स्थापत्य के साथ ही साथ निरन्तर प्रखारित सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर मौर्य, शुंग, कुषाण, गांधार (प्राचीन), चोल, चालुक्य, होयसल, चंदेल (मध्यकाल), होती हुई दर्शित हुई है, जिसका आधार संस्कृति व धर्म दोनों था व वास्तु शैली हिन्दू व बौद्ध (चैत्यगृह, मंदिर व हिन्दू शासकों के महल)। सभी मंदिरों का स्थापत्य नागर, द्रविड़ व बेसर शैली के हैं। हिन्दू स्थापत्य शैली का बाद भारत में इंडो–इस्लामिक वास्तु शैली का दर्शन होता है जो राजपूत एवं सिख स्थापत्य शैली को प्रभावित किया। वर्तमान समय में प्राचीन गुहा–वास्तु (रॉक कट आर्किटेक्चर) के दर्शन के रूप में अजंता, एलोरा व एलीफैंटा के गुफा भवन को देखा जा सकता है जो तीनो ये गुफाये महाराष्ट्र प्रदेश में स्थित हैं। सर्वाधिक भित्तिचित्रण का दर्शन अजंता उसके बाद एलो रा के गुफा–भवन में देखने को मिलता है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

मध्यकाल के सर्वाधिक भित्तिचित्र परंपरा राजस्थान के राजपूत हवेलियों, पंजाब, हिमाचल प्रदेश व मध्य भारत के कुछ भाग में इसका विकास क्रम देखा जा सकता है। राजस्थान में राजपूत शासकों व सेठों के हवे लियो आंतरिक भागों में फ्रेस्को बुनो पद्धति में निर्मि भित्तिचित्र देखा जा सकता है जिसके विषय काव्य रचनाओं पर आधारित, राजा का शौर्य प्रदर्शन, युद्ध, व्यक्ति चित्रण व पौराणिक कथा आदि हैं। आज भी राजस्थान के चूरू, उदयपुर, जयपुर व किशनगढ़ के हवेलियों में सावधिक भित्तिचित्र देखा जा सकता है यह कहना गलत नहीं होगा की आज भी राजस्थान भित्तिचित्र को संभाल कर रखा हुआ है। वर्तमान समय में राजस्थान के कुछ शहरों जैसे जयपुर, उदयपुर, किशनगढ़, जोधपुर, अजमेर व बीकानेर के रेलवे स्टेशन, सरकारी भवन, एयरपोर्ट व फ्लाई ओवर को भित्तिचित्र से सजाया गया है जिसकी पद्धति सपाट रंगांकन एवं मिश्रित माध्यम समकालीन है जिसमे एनेमेल पेंट, डिस्टेम्पर कलर, मोजैक, डिजिटल, धातु व मिश्रित सामग्री का प्रगोग हुआ है ।

हर भारतीय धार्मिक शहर की अपनी कला संस्कृति एवं स्थापत्य की वजह से एक विशेष पहचान होती है चाहे वह वाराणसी, प्रयाग, ऋषिकेश, हरिद्वार, गया, कुरुक्षेत्र, नासिक व उज्जैन इत्यादि क्यों न हो। भवन की आतंरिक वह वाह्य बनावट भिन्नता लिए होती है जिससे वह उस शहर की पहचान दिलाती है।

वाराणसी के प्राचीन भित्तिचित्रो ं के अवशेष मठ–मंदिरो ंसे प्राप्त होते हैं जिसमे दुर्गाकुंड, संकटमोचन व चिंतामणि गणेश आदि मंदिर प्रमुख रूप से हैं। वाराणसी के पास राम नगर के किले में भी परंपरागत लोक शैली में भित्तिचित्र का दर्शन होता है जो महल के आतंरिक दीवारों के सौंदर्य को बढ़ता है, विषय के रूप में श्री गणेश, मांगलिक चिन्ह, द्वारपाल, हाथी, घोड़े, फूल–पत्तियाँ व दैनिक जीवन आदि अंकित किया गया है । इसी प्रकार के भित्तिचित्र पारम्परिक रूप से प्रयाग व राजस्थान के शहर में भी देखे जा सकते हैं।

वाराणसी,घाट भित्तिचित्र

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

वाराणसी,घाट भित्तिचित्र

प्रयागराज स्थापत्य, भित्तिचित्र

प्रयागराज स्थापत्य, भित्तिचित्र

प्रयोग होने लगी है जिसमे सार्वजनिक स्थल, गैर सरकारी अट्टालिका, रेलवे स्टेशन, फ्लाई ओवर, क्रीड़ा स्थल व आतंरिक भवन की दीवार बच्चों का अध्ययन कक्ष व सैय्यन कक्ष इत्यादि। धार्मिक शरह के स्थापत्य को वहां के ऐतिहासिक, शहर की प्रसिद्धि व पौराणिक विषयों से सौंदर्यीकरण के रूप में भित्तिचित्रण किया जा रहा है जिसमे वर्तमान के टेक्नोलॉजी व माध्यम से परिपक्क सिद्धांत निहित है।

प्राचीन धार्मिक नगरों के पारम्परिक भवनों की वाह्य बनावट को बिना भंग किये, सहयोगी माध्यम, आकर्षित रंग व स्थानीय विषयों से उस शहर के सौंदर्य को भित्तिचित्रण के माध्यम से चार चाँद लगाया जा रहा है व इसके अतिरिक्त निशब्द सम्प्रेषण की भी भूमिका भित्तिचित्र निभा रही है।

कुछ प्रमुख धार्मिक शहरों के समकालीन भित्तिचित्र

भारत के प्रत्येक शहरों के पहचान के साथ वहां के भित्तिचित्र को देखा जा सकता है । वर्तमान समय में पुनः कुछ धार्मिक शहरों को वहां के विषय वस्तु–दैनिक जीवन, ऐतिहासिक, तीज–त्यौहार व संचारात्मक विषय आदि से भित्तिचित्रण के माध्यम से सौंदर्यीकरण को बढ़ाया जा रहा है। जिसमे वाराणसी (काशी), प्रयागराज, ऋषिकेश, हरिद्वार, गया, कुरुक्षेत्र, नासिक व उज्जैन इत्यादि का नाम अग्रणीय है। विगत वर्ष 2019 में प्रयागराज में अर्द्ध महा कुम्भ के दौरान प्रदेश के सरकारी तंत्र के द्वारा सम्पूर्ण प्रयागराज शहर भवनों जैसे रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, फ्लाई ओवर, विद्यालय, अस्पताल, पुराने भवन के गली आदि के सम्पूर्ण भवन के बाहरी दीवारों को

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

चमकदार, तीक्ष्ण रंगो के जगमगाया गया। ऐसा कहना गलत नहीं होगा की पूरा धार्मिक शहर एक रंगीन झाँकी में परिवर्तित हो गया था, वर्तमान समय में भी इन भित्तिचित्रण का दर्शन किया जा सकता है। सबसे बड़ी विशेषता इनके विषयों में यह देखा जा सकता है कि चाहे वह संगम के दृश्य, बेटी बचाओ व बेटी पढ़ाओ, सामाजिक प्रेरणा दायक विषय, हरिवंश राय बच्चन, महापुरुषों के व्यक्ति चित्रण, लोक कला व जनजातीय कला जैसे मधुबनी,वार्ली, गोंड व भील इत्यादि। जहाँ तक भित्ति चित्रण के सामग्री की बात की जाये तो बाहरी भित्ति चित्रण को सहायता प्रदान करने वाले रंगो का प्रगोग किया है जैसे एनेमल कलर, प्लास्टिक युक्त रंग, इसके अतिरिक्त सीमेंट,कंकरीट,स्टील पाइप व लकड़ी आदि। सिद्धांत के रूप में अर्द्ध सिद्धांत का प्रयोग किया गया है, जिसमे डायरेक्ट दीवार पर सफेदी लगा कर सपाट व तानयुक्त रंगो को भर कर काले या गहरे तान वाले रंग से सरहदबन्दी अर्थात आउटलाइन किया गया है। वाह्य भित्तिचित्र को सर्वदा संचार एवं सौंदर्य के लिए बनाया जाता है इसी लिए इसे काफी दूर से देखा जा सकता है, इसी को ध्यान में रख कर विषयगत संयोजन में आकृति को वृहद् व उष्ण तान वाले रंगों का प्रयोग किया गया है। शहर के फ्लाई ओवर के सीलिंग व पिलर्स के रूप को बाखूबी शत प्रतिशत प्रयोग कर उसको सक्रीय, सम्प्रेषण व सौंदर्य में परिवर्तित कर दिया गया है ।

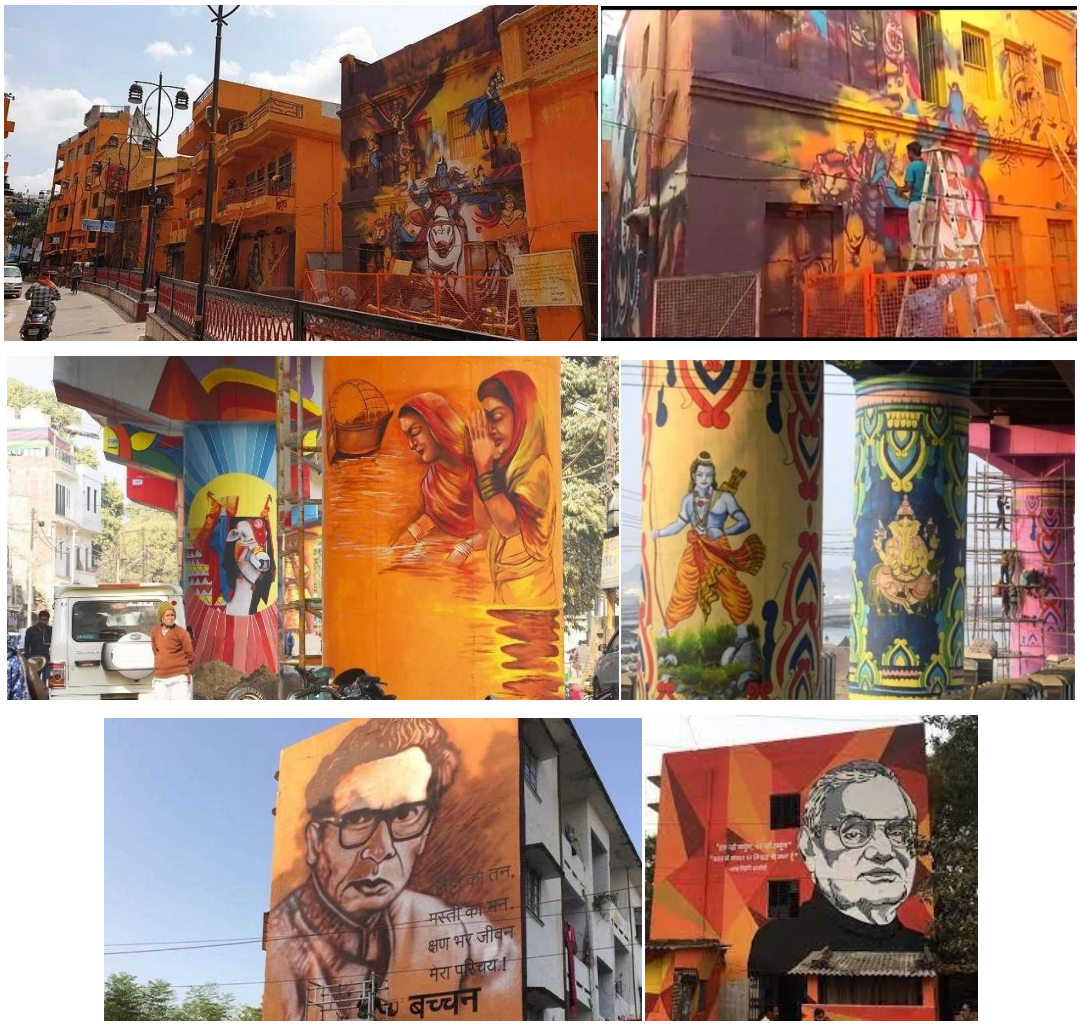

प्रयागराज स्थापत्य, भित्तिचित्र

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

इसी समय वाराणसी के शहर को भी भित्तिचित्रण से सजाया गया है जो हर राहगिर अपने आपको उसका अंश मनाता था और शहर की अपनी विषय की छवि से उसकी पहचान और सौंदर्य में बढ़ावा हुआ। भित्तिचित्र का संवाहक केंद्र के रूप में कैंट रेलवे स्टेशन, गंगा नदी के किनारे स्थित घाट, नगर के किनारे घरों के दीवारों पर, सार्वजनिक स्थल– पार्क व सरकारी स्थान –विद्यालय,हॉस्पिटल,क्रीड़ा स्थल इत्यादि। विषय के रूप में काशी के विभूतियों का व्यक्ति चित्र, बनारस के घाट, साधु–सन्यासी, दैनिक जीवन व पारम्परिक लोक जीवन, तीज–त्यौहार आदि। कैंट रेलवे स्टेशन के पूछताछ केंद्र के दीवार पर गंगा आरती के कथात्मक को चित्रित किया गया है इसी के साथ–साथ जैसे ही स्टेशन से बहार निकालेंगे एक पानी की टंकी है उसको पूरी तरह से आधुनिक डिजिटल प्रिंट के माध्यम से वाराणसी की कथा से सुसज्जित किया गया है।

माध्यमों के रूप में वर्तमान समय पे प्रयोग में आने वाली वाल पेंट, सीमेंट व मिश्रित माध्यम का प्रयोग किया गया है, तकनीक पक्ष को ध्यान से यदि देखा जाये तो कही ना कही पूर्णरूप से शास्त्रीय तकनीक–टेम्परा व फ्रेस्को का प्रयोग नहीं किया गया है। भित्तिचित्रण के आंशिक तकनीक को अपनाया गया है जो आउटडोर म्यूरल पेंटिंग के लिए इस्तेमाल होता है। काशी अपने सकरी गलियों, मठ–मंदिरों के लिए भी विख्यात है जिसमे संकट मोचन, काशी विश्वनाथ, काल भैरव, दुर्गा कुंड व चिंतामणि गणेश आदि प्रमुख हैं सभी के तोरण द्वार के साथ ही साथ मंदिर के परिसर को पत्थर के रिलीफ भित्तिचित्र व आउटडोर में प्रयोग होने वाले वाल कलर से पौराणिक कथात्मक दृश्य से सजाया गया हैं जिसको देख कर दर्शनार्थी अपने आप को उसमे इंगेज कर लेता हैं। ऐसे ही भित्तिचित्र से सम्पूर्ण शहर के गलियों के बाहरी दीवार को भी सजाया गया हैं ।जिससे बहार से आये दर्शनार्थियों को काशी के बारे में बिना किसी पुस्तक पढ़े संक्षेप में जानकारी वहां की मिल जाये। यह प्रोजेक्ट प्रदेश सरकार की थी और भित्ति–चित्रकार सम्पूर्ण भारत व स्थानीय थे।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

वाराणसी शहर के भित्तिचित्रण

इन्ही शहरों के क्रम में कुरुक्षेत्र का भी नाम आता हैं जिसको अन्य धर्मक्षेत्र के नाम से भी जानते हैं। यहाँ पर दो स्थानों की बहुत महत्ता हैं पहला ब्रह्मसरोवर व दूसरा ज्योतिसर, धार्मिक ग्रंथों में ऐसा वर्णित हैं की ग्रहण लगने और अमावस्या के समय श्रद्धालुओं के स्नान करने की मान्यता हैं जो वर्तमान समय में भी आस्था व विश्वास के साथ जनमानस द्वारा निभाया जा रहा हैं। तत्कालीन समय में यहाँ पर अंतराष्ट्रीय गीता जयंती समारोह मनाया जाता हैं, इसके दौरान हरियाणा सरकार द्वारा पुरे शहर को पौराणिक कथा, महाभारत की कथा, ऐतिहासिक, दैनिक जीवन, तत्कालीन विषय, प्रान्त के कला–संस्कृति व लोक कलाओं आदि विषयों से भित्तिचित्रण करवाया गया है।

भित्तिचित्रण का दर्शन पीपली के फ्लाई ओवर से होते हुए सार्वजनिक स्थलों तक वह ब्रह्म सरोवर के सम्पूर्ण परिसर को सजाया गया है इसी क्रम में ज्योतिसर के प्रांगण को म्यूरल पेंटिंग से सुन्दर बनाया गया है। भित्तिचित्रण के लिए पुरे भारत से चित्रकारों का चयन कर उसने यह कार्य सम्पन्न करवाया गया है, जिसमे सबसे ज्यादा युवा चित्रकारों की भूमिका रहती है। यहाँ भी वैसे ही सामग्री व तकनीक का प्रयोग किया गया है जैसा की प्रयागराज व वाराणसी के भित्तिचित्रण में किया गया है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

कुरुक्षेत्र शहर के भित्तिचित्रण

इसी वर्ष 2021 में हरिद्वार महा कुम्भ, दिनांक 1 से 30 अप्रैल तक था, इस शहर को भी राज्य सरकार द्वारा पुरे शहर को पौराणिक कथा, ऐतिहासिक, दैनिक जीवन व लोक कलाओं जैसे विषय से भित्तिचित्रण करवाया गया। यहाँ भी सम्पूर्ण भारत के चित्रकारों की महती भूमिका थी। माध्यमों के रूप में वर्तमान समय पे प्रयोग में आने वाली वाल पेंट व मिश्रित माध्यम का प्रयोग किया गया है, तकनीक पक्ष को ध्यान से यदि देखा जाये तो कही ना कही पूर्णरूप से शास्त्रीय तकनीक–टेम्परा व फ्रेस्को का प्रयोग नहीं किया गया है। भित्तिचित्रण के आंशिक तकनीक को अपनाया गया है जो आउटडोर म्यूरल पेंटिंग के लिए इस्तेमाल होता है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

हरिद्वार शहर के भित्तिचित्रण

समकालीन भित्तिचित्रण में प्रयुक्त सामग्री व सिद्धांत

सामग्री

साधारण भित्तिचित्रण से तात्पर्य तकनीकी से है जो स्वतंत्र रूप से किसी भी दीवार पर अर्द्ध–तकनीक आधारित चित्रण किया जाता है। जैसा की फ्रेस्को व टेम्परा तकनीकी में दीवार के सतह को विधिवत तैयार किया जाता है वैसा इसमें नहीं देखा जाता।

वर्तमान समय में बहुत से प्राचीन शहर को सजाया जा रहा है, विषय–वस्तु स्थानीय, भवन को भंग किये बिना, रेडीमेड कलर द्वारा (एनेमेल पेंट, ऐक्रेलिक कलर, डिस्टेंपर कलर), अन्य सामग्री में लकड़ी, मेटल, टेर्राकोटा, सीमेंट–बालू, मोजैक, टाइल्स, प्लास्टिक, एक्रेलिक शीट, कार्ड बोर्ड, स्टिल की पाइप, लोहा, प्लाई व प्लास्टर ऑफ पेरिस इत्यादि। इन सामग्रियों को वाह्य व आतंरिक भित्तिचित्रण के अनुसार प्रयोग में लाया जा रहा है।

इस तरह के भित्तिचित्रण समकालीन शहरों में देखा जा सकता है, कुरुक्षेत्र पीपली फ्लाई ओवर के दीवारों पर, वाराणसी के रेलवे स्टेशन, घाट व सड़कों के किनारे स्थित भवनों के वाह्य दीवारों पर, प्रयाग शहर, रेलवे स्टेशन व प्रमुख भवन, हरिद्वार, ऋषिकेश, दिल्ली मेट्रो स्टेशन व शहर, मुंबई एयरपोर्ट, चंडीगढ़, जयपुर, बंगलौर, केरल, पटना रेलवे स्टेशन, फरीदाबाद, शिमला, उदयपुर रेलवे स्टेशन व भारत के सभी प्रदेश के रेलवे स्टेशन व एयरपोर्ट आदि। जिसमे भित्तिचित्रण के आंशिक सिद्धांत को अपनाया गया है।

टेक्नोलॉजी युक्त भित्तिचित्रण सिद्धांत

21वीं सदी में टेक्नोलॉजी का बहुत ही ज्यादा विकास देखने को मिल रहा है उसी की वजह से सभी कार्य क्षेत्रों में एक परिवर्तन देखा जा रहा है। जहाँ पर भित्तिचित्रण में शास्त्रीय सिद्धांतो का पूर्व के काल में स्वर्णयुग था वही समकालीन भित्तिचित्रण में विज्ञान का समावेश हो गया है। जिसमे कम्प्यूटर आधारित डिजाइन कर उसको फ्लेक्स मोड में प्रिंट (डिजिटल प्रिंट) कर दीवारों पर चस्पा किया जा रहा है, इसके अतिरिक्त भवन के आतंरिक और वाह्य दीवारों की सतह पर प्लास्टिक युक्त पेंट से प्रिंट लिया जा रहा है लईडी लाइट का भी प्रयोग किया जा रहा है, कम्प्यूटर स्क्रीन को भी भित्तिचित्रण का पार्ट बना कर उसका प्रगोग किया जा रहा है। कम्प्यूटर आधारित थ्री–डी (त्रिआयामी) व ध्वनि प्रधान भित्तिचित्रण समकालीन समाज पसंद कर रहा है और इस कला को प्रयोगधर्मी चित्रकार व कलाकार एक आयाम रूपी भित्तिचित्रण टेक्नोलॉजी के साथ पूर्ण कर रहे हैं।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

समकालीन भित्तिचित्रण की उपयोगिता व सौंदर्य

किसी भी कला में समयानुकूल प्रयोग हुए हैं ऐसा नहीं की गणित व विज्ञान की भाति निश्चित उसका मापदंड होता है। कलाकारों के प्रयोगधर्मी स्वभाव की वजह से कला में नए तकनीक व शैली का जन्म होता है, इसी प्रवित्ति के साथ भित्तिचित्रण में भी समकालीन भित्ति कलाकारों ने नए प्रगोग कर उसके सौंदर्य व उपयोगिता पर बल दिया। समकालीन भित्तिचित्रण निम्न आधार देखें जा सकते हैं

- रंगीन शहरी वातावरण – सम्पूर्ण भवन को चित्रित करना (रंगीन) व सम्पूर्ण शहर खुला चित्रकारी प्रदर्शनी की तरह प्रतीत होती हैं ।
- भवन का वाह्य सौंदर्य व आतंरिक सौंदर्य दोनों में कांति दिखने लगती हैं ।
- यह एक संचार व जागरूकता में भी सहायक होता है ।
- भवन की आयु में बढ़ोत्तरी भी देखा जा सकता है, सामग्री के प्रयोग की वजह से ।
- राहगीर को लुभाता है वह उसके थकान को भंग कर आनंद की अनुभूत कराती है और राहगीर अपने आप को उसका हिस्सा मानाने लगता है ।
- समृद्ध वातावरण, कला व संस्कृति को बढ़ावा देता है ।
- स्थानीय शहर को पहचान के साथ वहां के लोगों का भी गौरव बढ़ता है ।
- भित्ति– चित्रण से स्थापत्य का परिचय –शिक्षा संस्थान, धार्मिक भवन, सार्वजनिक भवन – बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, हॉस्पिटल क्रीड़ा स्थल, सरकारी व गैर सरकारी भवन
- सुन्दर व प्रभावशाली भित्तिचित्रण से इसके निर्माता अर्थात कलाकार का भी मान बढ़ता है ।
- यह एक कला मात्र नहीं अपितु भारतीय गुफा चित्र के विकासक्रम का एक हिस्सा है, जिसकी सहायता से आम जन–मानस को कला यात्रा, शैली व तकनीक से अपने ज्ञान में बढ़ोत्तरी करता है ।

समकालीन वाह्य भित्तिचित्र का रख–रखाव

वर्तमान समय में भित्तिचित्रण के लिए सरकारी व गैर सरकारी तंत्र द्वारा प्रोत्साहन मिल रहा है । जिसके पीछे का उद्देश्य यही है कि शहर के सौंदर्य के वातावरण को जन्म देना व इसके साथ ही साथ भवन को आर्ट पीस बनाकर उस शहर का परिचय के साथ उसको विख्यात करवाना। प्राथमिक आंकड़े एकत्र के दौरान देखा गया कि भित्तिचित्र के रख रखाव पर एक बहुत ही चिंता जनक प्रश्न खड़ा होता है इसके रख रखाव के लिए समय समय पर भारत के अनेक प्रांतो के समकालीन प्रसिद्ध भित्ति कलाकारों जैसे प्रो. हिम चटर्जी (शिमला), प्रो. हर्ष वर्धन शर्मा (जम्मू), श्री भवानी शंकर शर्मा (जयपुर), श्री संतोष कुमार सिंह (वाराणसी),डॉ. राकेश बानी (कुरुक्षेत्र), श्री विशाल भटनागर (चंडीगढ़),व श्री श्रीनाथ शर्मा (वाराणसी) से चर्चा व साक्षात्कार किया। जिन्होंने कुछ कारण व सुझाव बताये

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

- चूकि यह भित्तिचित्रण खुले आसमान के दीवार पर चित्रित किया हैं गया हैं जिसका कारण प्राकृतिक जैसे धुप, वर्षा, आँधी व शीत आदि प्रमुख हैं। दीवार की ऊपरी भाग में छज्जे के होने से बचाव किया जा सकता हैं ।
- भूमि बंधन सही से नहीं होने के कारण रंगों का खराब होना।
- किंचित नमी वाले दीवार कि सतह के प्रयोग से रंगो व अन्य सामग्री में फफूंदी आदि के वजह से भित्तिचित्र खराब होने लगता हैं, इसलिए भित्तिचित्रण के दौरान सर्व प्रथम दीवार की सतह के नमी का जरूर परिक्षण करना चाहिए। इसके अतिरिक्त भवन के सामग्री के अनुसार ही भित्तिचित्रण के सामग्री का चुनाव करना चाहिए।
- समय समय पर चित्रों साफ–सफाई व देख–रेख होनी चाहिए। जिससे की धुल आदि से भित्तिचित्र खराब ना हो।
- सर्वदा आम जनता जनार्दन द्वारा चित्रों को उत्साह में छुआ या खुरचा जाता हैं जिनके हाथों की पसीना या धब्बे से रंग या अन्य सामग्री में निर्मित भित्तिचित्र खराब होते नजर आते हैं। इसके लिए भित्तिचित्र के पास सूचना पट्ट व निश्चित दूरी पर पाइप या रस्सी से घेरा बंदी कर देना चाहिए।
- स्थानीय व यात्रीजन को भित्तिचित्रण के महत्व एवं उसके मूल्यों को समझाने से भी चित्रण का रख–रखाव अच्छे से हो सकेगा।

निष्कर्ष

समकालीन समाज में भित्तिचित्रण कही ना कही लोक संस्कृति को बढ़ावा और जन–मानस तक पहुंचने में बहुत बड़ी भूमिका निभा रहा है। स्थापत्य सौंदर्य के साथ पुनः सामान्य जन तक आसानी से लोक कलाओ का संचार हो रहा है। इसके अतिरिक्त भित्ति–चित्रण को निहारता दर्शक अपने आपको को उसका पात्र समझ कर कुछ देर तक उसका हिस्सा बन जाता है। इस प्रकार भित्ति–चित्रण अपनी लोक संस्कृति को समकालीन समाज तक पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम है।

अपेक्षित परिणाम

यह शोध –पत्र भित्तिचित्रण और स्थापत्य के सौंदर्य में जो परिवर्तन हो रहे है, उसके नये तकनीक व शैली का विस्तार पूर्वक ज्ञान को विश्वविद्यालय के ललित कला व दृश्यकला के विद्यार्थियों, जनमानस कला प्रेमियों, शोधार्थियों व विद्वानों के सम्मुख रखेगा व उनको एक नई दृष्टि प्रदान करेगा। इस शोध–पत्र से यह भी पुष्टि होगा कि भित्तिचित्रण से शहर के सौंदर्य में बढ़ोत्तरी होती है। यह शोध नई पीढ़ी को भित्तिचित्रण के सौंदर्य बोध के विचारो की महत्ता को स्वीकार कर कुछ नवप्रयोग करने के लिए प्रेरित करेगा ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

डॉ. भानु अग्रवाल, 1991, भारतीय चित्रकला के मूल–स्रोत, एल्गॉरिदम पब्लिकेशन्स, रवींद्रपुरी, वाराणसी, प्रथम संस्करण

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

डॉ. अविनाश बहादुर वर्मा, 1999, भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, बरेली
राय कृष्ण आनंद, भारत की चित्रकला
जे. सी. नागपाल, 1988, म्यूरल पेंटिंग ऑफ इण्डिया, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, शास्त्री नगर, दिल्ली
शिव राम मूर्ति, 2010, आर्ट इंडिया, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, वसंतकुंज, दिल्ली (दूसरा संस्करण)
प्रो. किरण सरना, 2016, भारतीय भित्तिचित्रण, नव जीवन पब्लिकेशन, चौडा रास्ता, जयपुर
डॉ. रुदल प्रसाद यादव, 2000, प्राचीन भारतीय कला, माधो प्रिंटर्स, पुराना बैहराना, इलाहाबाद
https://en.wikipedia.org/wiki/Prayag_Kumbh_Mela (date-25-05-21, time 01:15 pm)
https://zeenews.india.com/hindi/photo-gallery (date-25-05-21, time 08:40 pm)
https://www.amarujala.com/photo-gallery/dehradun/haridwar-kumbh-mela-2021
https://www.google.com/search?q=varanasi++cantt+mural
https://paintinginspired.blogspot.com/2019/06/painting-buddha-cave-art-ajanta-caves.html (Date- 26-05-21,time- 09:28 pm)
https://www.pinterest.com/pin/402087072954875350/ (Date- 26-05-21, time- 10:35 pm)
https://www.google.com/search?q=varanasi+mural&rlz (Date- 26-05-21, time- 10:43 pm)
https://www.google.com/search?q=prayag+mural&tbm (Date- 26-05-21, time- 10:52 pm)
https://www.google.com/search?q=prayagraj+mural+painting&rlz (Date- 27-05-21, time- 09:52 am)
https://www.google.com/search?q=varanasi+mural&rlz (Date- 27-05-21,time- 10:05 am)
https://www.google.com/search?q=varanasi+railway+station+mural&rlz (Date- 27-05-21,time- 10:13 am)
https://www.google.com/search?q=varanasi+mural&tbm , date- 27-05-21
https://www.google.com/search?q=kurukshetra+city+++mural&tbm , Date- 27-05-21
https://www.google.com/search?q=haridwar+city , Date- 27-05-21